राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
राजभवन, पटना–800022

प्रेस–विज्ञप्ति

संख्या–127/2024

कबीरदास एक महान संत थे और सच्चे समाज सुधारक थे–राज्यपाल

पटना, 22 जून, 2024 :– माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने जगजीवन राम संसदीय अध्ययन एवं राजनीतिक शोध संस्थान, पटना में संत कबीरदास जी की जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया।

इस अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि संतों का जीवन विश्व कल्याण के लिए होता है। कबीरदास एक महान संत थे और उनका चिंतन समाज के लिए था। उन्होंने गीता में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा दिये गये आश्वासन का उल्लेख करते हुए कहा कि जब–जब समाज की स्थिति में अत्यधिक अवनति आती है, तब–तब ईश्वर स्वयं या संतों के रूप में आकर समाज का विशिष्ट रूप से मार्गदर्शन करते हैं। कबीरदास भी उसी आश्वासन को लेकर आये थे।

राज्यपाल ने कहा कि हमारे देश में संत का दर्जा Beatification द्वारा नहीं दिया जाता है, बल्कि भारत में यह अधिकार समाज को है। यह हमारा मौलिक चिंतन है। कबीरदास का जीवन समाज और विश्व के कल्याण के लिए समर्पित था। ऐसे लोगों के आचरण और कृतित्व से समाज का परिष्कार और विकास होता है तथा वे अपने आप संत बन जाते हैं।

उन्होंने कहा कि कबीरदास ने कभी भी हिन्दू धर्म के मौलिक तत्वों पर आघात नहीं किया, बल्कि इसके भेदबुद्धि, मतवाद व अलगाववादी प्रवृतियों तथा सामाजिक–धार्मिक रूढ़ियों के विरूद्ध जनमानस में जागृति पैदा करने का प्रयास किया। वे एक सच्चे समाज सुधारक थे तथा उनकी शिक्षा सब के लिए थी। वे समाज के मार्गदर्शन के लिए अवतरित हुए थे।

राज्यपाल ने कहा कि हमारे संतों ने अपनी स्वयं की उन्नति के लिए कुछ नहीं किया, बल्कि उनका जीवन दूसरों की भलाई के लिए समर्पित रहा है। उन्होंने नामदेव, रामदास, तुकाराम, नरसी मेहता, कम्ब आदि संतों का उल्लेख करते हुए कहा कि कबीरदास की भाँति इन्होंने भी सामाजिक जीवन को सुधारने का प्रयास किया।

आगे पृष्ठ.....2 पर

राज्यपाल ने कहा कि समाज के अलग–अलग आयाम हैं और कबीरदास अथवा रैदास के समाज का अर्थ किसी विशिष्ट समाज से नही, बल्कि सम्पूर्ण समाज से है। उन्होंने समाजवाद की चर्चा करते हुए कहा कि हमारा चिंतन 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' का नहीं, बल्कि 'सर्वजन सुखाय' का रहा है। उन्होंने कहा कि संतों को किसी जाति अथवा समाज विशेष का मानना उचित नहीं है। हमें उस सोच से बाहर आना चाहिए। संत सबके होते हैं और सबके कल्याण के लिए कार्य करते हैं। उन्होंने कहा कि हमें कबीर की जीवनी पढ़नी चाहिए तथा उनकी शिक्षाओं को आत्मसात करना चाहिए। कबीरदास का विचार सबके लिए कल्याणकारी है।

राज्यपाल ने कहा कि बिहार के सभी विश्वविद्यालयों को उनसे संबंधित जिले के 20 गाँवों को अपनाने का निदेश दिया गया है ताकि विद्यार्थियों को सुदूर क्षेत्रों में जाकर शिक्षा दी जा सके। उन्होंने कहा कि आज शिक्षा को महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की चहारदीवारी से बाहर ले जाने की जरूरत है।

कार्यक्रम को उच्च शिक्षा निदेशक डॉ० रेखा कुमारी, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ० संजय पासवान एवं के०एस०डी० संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ० उमेश शर्मा ने भी संबोधित किया।

इस अवसर पर जगजीवन राम संसदीय अध्ययन एवं राजनीतिक शोध संस्थान, पटना के निदेशक डॉ० नरेन्द्र पाठक एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

.....